धार्मिक

डा. ज्योति चंद्राकर

होलिका दहन में डाड़ गाड़ना और कुंवारी होली

एहोलिका दहन असत्य पर सत्य के विजय का त्योहार माना जाता है। पुराणों के अनुसार माना जाता है कि इस दिन बुआ होलिका ने भतीजे प्रहलाद को गोद में बिठाकर जलाना चाहा था,परंतु स्वयं जलकर राख हो गई और विष्णु भक्त प्रहलाद बच गया। इसी याद में रात्रि में होलिका दहन फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष के चतुर्दशी को किया जाता है। होलिका दहन प्रतीक है ,अत्याचार के विनाश का। जिसमें असत्य रूपी होलिका जल जाती है और सत्य रूपी प्रहलाद बच जाता है। होलिका दहन का त्योहार सामुदायिकता का त्यौहार है जिसे अंचल में सभी जाति के लोग समूह में मिलकर मनाते हैं । ग्रामीण अंचल में होलिका दहन का त्यौहार बसंत पंचमी के दिन से शुरू हो जाता है। वसंत पंचमी के दिन अरंड (अरंडी) पेड़ की टहनी गांव के होलिका दहन करने वाले स्थल में गड़ा दी जाती है। इसी दिन से गांव में लकड़ी इकट्ठा करना, नगाड़ा बजाना शुरू किया जाता है। इस प्रकार एक महीने तक लकड़ी इकट्ठी की जाती है । ग्रामीण इसे डाड़ गाड़ना कहते हैं। गांव के सभी वर्ग के पुरुष होलिका दहन के मुहूर्त के अनुसार होलिका दहन करते हैं। पूर्व समय में ग्रामीण क्षेत्र में होलिका दहन के समय बैगा द्वारा पूजा कर मंत्र जाप करने के पश्चात चकमक पत्थर से अग्नि उत्पन्न कर उससे होलिका जलाई जाती थी, जिसे कुंवारी होली कहा जाता था। वर्तमान समय में चकमक पत्थर का उपयोग नहीं किया जाता।

लोकगीत

डा. राजन यादव

अंचल में होली के अवसर पर गाए जाते हैं फाग गीत

छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख त्योहार दीपावली और होली का सम्बन्ध फसल चक्र से है। दीपावली खरीफ फसल से जुड़ा है तो होली रबी फसल से। फाग लोक गीतों का एक सरस अंग है। फाग गीत एक परिष्कृत तथा सांस्कृतिक रुचि का निर्देशन भी है। छत्तीसगढ़ में फाग गीत बसंत पंचमी से चैत्र पूर्णिमा तक सभी लोगों द्वारा नगाड़ा, टिमकी, टासक, मंजीरा आदि वाद्यों के साथ गाया जाता है। बसंत पंचमी के दिन लोग अरंड वृक्ष की एक शाखा काट कर शहर या गांव के उस स्थान पर स्थापित करते हैं जहां होलिका दहन किया जाता है। गांव के चौपाल या मंदिर के चबूतरों या प्रांगण में रात्रि के समय लोग एकत्र होकर फाग गाते हैं। शास्त्र की तरह लोक में भी प्रथम पूजित गणेश जी का पावन स्मरण किया जाता है। वंदना परक फाग गीतों में भी जवांरा गीत की भांति एक ही गीत में कई देवी देवताओं के प्रसंग आते हैं -

ए हो प्रथम चरण गणपति को हो
गणपति को मनाव, प्रथम चरण गणपति को।
काकर पुत गणपति भए, का पुत हनुमान।
काकर पुत भैरव भए, काकर पुत भगवान ।

छत्तीसगढ़ी फाग गीतों के कथानक विस्तृत होते हैं। फाग गीतों में सभी देवताओं को बराबर स्मरण किया जाता है। युवा जन अपनी प्रेम भावना को राधा कृष्ण के प्रेम प्रसंगों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

परब विशेष

कमल नारायण

कवर्धा के आदिवासी तेरह दिनों तक मनाते हैं होली

छत्तीसगढ़ का अधिकांश हिस्सा आदिवासी बाहुल्य है, जिसमें होली त्योहार मनाने की परम्परा अन्य स्थानों से भिन्न होती हैं। यह आदिवासी वर्ष भर विभिन्न तीज त्योहारों उत्सव को रंगीन बनाने के लिए अलग-अलग तरीके से नाच गाना करते हैं। इनके उत्सव के अपने अलग रंग होते हैं। इसी तरह कबीरधाम जिले में निवासरत बैगा जनजाति फागुन तेरस तक होली मनाते हैं। खासकर यहां के बोड़ला और पंडरिया विकास खंड में आदिवासी एक दूसरे के गांवों में जाकर होली खेलते हैं जिसे खेकड़ा और खेकड़ी के नाम से जाना जाता है। यहां प्रस्तुत किए जाने वाले गीत और नृत्य को करमा फाग गीत कहते हैं। नृत्य के दौरान पुरुष और महिला मुखौटा पहने रहते हैं। गीत और नृत्य प्रस्तुति के समय नर्तक दलों द्वारा विशेष श्रृंगार किया जाता है। महिलाएं श्रृंगार में तोड़ा, पहुंची, रुपिया माला, करधन और कौड़ी का उपयोग करते हैं। पुरुष वर्ग काली जैकेट, कमीज, सालुखा, मोर पंख की कलगी और गले में माला धारण करते हैं। सभी कलाकार अपने अनुसार , टासक वाद्य यंत्र का उपयोग करते हैं।

दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी देवी के मंदिर में कलश स्थापना के बाद फागुन मड़ई का शुभारंभ होता है। षष्ठी के दिन मड़ई के शुरुआत के दूसरे दिन तालाब से ताड़ के पत्तों को धोकर होलिका दहन के लिए रखा जाता है। मान मनौती और पूजा पाठ के साथ सामाजिक मेल मिलाप मड़ई का आकर्षण होता है। दंतेश्वरी माता की डोली में आंवले का फल चढ़ाया जाता है और बाद में लोग एक दूसरे पर आंवले की बौछार करते हैं। आमंत्रित देवी देवताओं को मेडका डबरा में ठहराया जाता है। दस दिनों की इस फागुन मड़ई में पूरी बस्ती लोकगीतों और लोक नृत्यों से गूंजती रहती हैं।

दंतेवाड़ा में देवी-देवताओं के बीच मनाई जाती है फागुन मड़ई

बस्तर अंचल में दंतेवाड़ा की फागुन मड़ई का अपना अलग ही महत्व है। फागुन मड़ई के उल्लास में शामिल होने की दावत देव गुड़ियों में विराजमान देवी देवताओं को भी दी जाती है। वैसे इन देवी देवताओं की संख्या अधिक होती है। ग्रामीण जनों से प्राप्त जानकारी के अनुसार 39 गांवों की 55 देवियों को मड़ई में आमंत्रित किया जाता है, जबकि ग्राम बालूद के हिरमराज देव ही अकेले देवता के रूप में बुलाए जाते हैं। आमंत्रित देवियों में टेकानार की परदेशीन माता, हिरमा माता, शीतला माता, कोलाकामिनी माता, बालपेट की गंगना देवी, मटेनार की सेमरिया माता, बेलगुर की पातका देवी, मलेनार की पीलाबाई, कारली की धांस बोडिन माता प्रमुख हैं। दंतेश्वरी देवी के कलश स्थापना के बाद फागुन मड़ई का शुभारंभ होता है। षष्ठी के दिन मड़ई के शुरुआत के दूसरे दिन तालाब से ताड़ के पत्तों को धोकर होलिका दहन के लिए रखा जाता है, इसे ताड़ पलंगा विधान कहते हैं। अष्टमी के दिन खोर खोदनी विधान होता है। अर्थात आदिवासियों का समूह

तीज तिहारः अश्विनी केशरवानी

दन्तेश्वरी देवी के सामने नृत्य करता है। अगले दिन मांडनी विधान में भी नृत्य किया जाता है। मान मनौती और पूजा पाठ के साथ सामाजिक मेल मिलाप मड़ई का आकर्षण होता है। फागुन मड़ई के अगले दिन चार दिन क्रमशः लम्हामार, कोडरीमार, चीतलमार, और गबरमार का आयोजन होता है। लम्हा यानि खरगोश, चीतल शिकार का स्वांग रचा जाता है। चतुर्दशी के दिन आंवरामार का आयोजन होता है। दंतेश्वरी माता की डोली में आंवले का फल चढ़ाया जाता है और बाद में लोग एक दूसरे पर आंवले की बौछार करते हैं। इसमें दर्शकों का मनोरंजन होता है। षष्ठी से लेकर दंतेवाड़ा के मड़का डबरा मैदान में फागुन माह के शुक्ल पक्ष के छठवें दिन दंतेश्वरी देवी का कलश स्थापित होता है। आमंत्रित देवी देवताओं को भी मेडका डबरा में ठहराया जाता है। रंग बिरंगी पालकी में ग्रामवासी इन्हें यहां लाते हैं। दस दिनों की इस फागुन मड़ई में पूरी बस्ती लोकगीतों और लोक नृत्यों से गूंजती रहती हैं। बसंत ऋतु में दंतेवाड़ा का जन जीवन फागुन मड़ई के सम्मोहन में बंध कर शंखनी और डंकनी नदी के संगम में इकठ्ठा होने लगता है।

पर्यटन : तपेश जैन

सरगुजा अंचल के महत्वपूर्ण स्थलों में कैलाश गुफा

जशपुर अंचल में बगीचा से बतौली से होकर करीब 40 किलोमीटर गायबुड़ा के जंगल में कैलाश गुफा स्थित है। बताया जाता है कि यहां कभी भी बारिश गिरने लगती है। वर्ष भर यहां अधिकतर वर्षा होते देखी जाती है। गुफा के अंदर से बादल को निहारने पर ऐसा लगता है मानों हम पहाड़ की चोटी से बादल के करीब ही हैं। यह कैलाश गुफा छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध संत गहिरा गुरु की तपोस्थली रही है। इस स्थल पर भगवान शिव का मंदिर दर्शनीय है। कैलाश गुफा के आसपास दुर्लभ प्रजाति की जड़ी बूटियां पाई जाती हैं । यहां पाई जाने वाली एक तेज बल वृक्ष प्रसिद्ध धाम केदारनाथ के बाद कैलाश गुफा में ही पाया जाता है, तेजबल वृक्ष की पत्तियां औषधि गुण से परिपूर्ण हैं। कैलाश गुफा के संदर्भ में संत गहिरा गुरु के पुत्र व वभ्रुवाहन बताते हैं कि यह स्थान प्राचीन ऋषि परंपरा का साक्षी है। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण हरियाली लिए कैलाश गुफा सरगुजा अंचल का सबसे ज्यादा महत्व का पर्यटन स्थल है।

लोक साहित्य

मृणालिका ओझा

छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं में लोक विश्वास

छत्तीसगढ़ी लोककथाएं लोक विश्वास रूपी रक्त द्वारा ही संचालित हैं। विश्व की समस्त लोक कथाओं में वहां के लोक मानस में व्याप्त लोक विश्वासों के छाप अंकित हैं। यह लोक विश्वास यदि एक ओर उन मान्यताओं की ओर संकेत करते हैं, जो हमारी आज की मान्यताओं तक की सुदीर्घ यात्रा में तय की गई दूरी को बताते हैं, तो दूसरी ओर हमारे आदिम जीवन के उस मस्तिष्क को भी प्रमाणित करते हैं जो कच्ची मिट्टी के घड़े सदृश था। छोटी छोटी घटनाएं मनुष्य को रहस्यमय ढंग से सोचने को विवश करती थीं, यह बात लोक कथाओं में व्यक्त लोक विश्वासों द्वारा ही अनुमानित हो सकती हैं। जब मनुज मस्तिष्क इतना सुविकसित व परिष्कृत नहीं था, जो किसी परिणाम के वास्तविक कारणों का पता लगा सके। अतः इन लोक विश्वासों के सहारे हम मनुष्य के हजारों हजारों वर्ष पूर्व व्यतीत जीवन को टटोलते हैं। इनमें से कुछ लोक विश्वास तो पारंपरिक होते हैं और कुछ सामयिक परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं। भय और आशंकाओं से पूरित मानव मन न मालूम कितने विश्वासों को जन्म दे रहा है और कितनों को जीवित रखने में सहायक बना है। कुछ विद्वानों के अनुसार अविवेक एवं अज्ञान ही लोक विश्वासों का जनक है। इस कथन की सत्यता पर हम विचार करने के लिए तब विवश हो जाते हैं जब आज के शिक्षित समाज में भी इन लोक विश्वासों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में श्वास लेते हुए देखते हैं। सभ्यता की चोटी पर पहुंचे देशों में आज भी जानवरों व पक्षियों के दर्शन, उनके द्वारा पथ पर आड़ करने, छींक आदि से संबंधित सैकड़ों लोक विश्वास व्याप्त हैं प्रायः विश्व के सभी देशों में यह अपने विभिन्न फलादेश के साथ मान्यता प्राप्त है जो हमारे आदिम संस्कारों के अवशेष हैं।

परम्परा

डा. राघवेन्द्र कुमार 'राज'

रंगों से मिलन का पर्व होली

छत्तीसगढ़ की पवित्र वसुंधरा ने न केवल दिव्य रत्नों को जन्म दी हैं वरन् बहुजन हिताय की सूक्तिवाक्यों को आत्मसात भी किया है। इसके हृदय स्थल में विविध पर्वों ने अठखेलियां की हैं और लोकमानस को आह्लादित भी किया है। तभी तो यहां की लोकधारा गा उठती है -
करता पहुनाई जन-जन का,जहां आँखों का पानी।
किशन के प्रेम रंगों में भीगती जहां राधा दीवानी।
सनातन धर्म में होलिका पूजन का विशेष महत्व है।जो सुख -सौभाग्य प्राप्ति का माध्यम भी है। जहां वसुधैव कुटुम्बकम् की पवित्र भावना फलीभूत होती हुई दृष्टिगोचर होती है।

छत्तीसगढ़ में होलिका पूजन की अपनी अनूठी परम्परा और मान्यताएं विद्यमान हैजो कहीं न कहीं निश्चित रूप से 'सर्वेभवन्तु सुखिनः'की पवित्र भावना से अनुप्राणित सा लगता है। होलिका पूजन में जो यज्ञाहुतियां दी जाती हैं। उसके पीछे भी लोक धारणाएं और प्राचीन मान्यताएं हैं। जैसे -घी और सरसों तेल के दिये जलाना, सात गेहूं की बालियां और सात सफेद सूत के (धागे), हल्दी का तिलक,रोली, सिन्दूर, श्रीफल, लौंग, कपूर, काले तिल के दाने, राई, गाय के गोबर की उपलें (कंडा या छेना), चांवल, दही, हलुवा, मालपुवा और अरंड (अंडा) पेड़ की टहनी गाड़ना आदि। ऐसा मानना है कि सरसों तेल के दिये जलाने से भगवान काल भैरव का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

सात गेहूं की बालियां सप्ताह में सात दिन, विवाह में सात फेरे और सात अंक शुभ का प्रतीक है। सात कच्चे सफेद सूत का संबंध शनि ग्रह से है। इसके अर्पण से शनिदोष से मुक्ति मिलती है। उपलों को सात धागों से बांधने से बुरी शक्तियां बंध जाती हैं। सात पान के पत्ते चाहे अरंड या कपूरी पान के हो। इसके अग्निहोत्र से परिवार में सुख, शांति, समृद्धि और उन्नति की प्राप्ति होती

है। लौंग और कपूर की आहुतियों से सुख -शांति, धनवृद्धि, घर में बरकत और पितृ व देवदोषों के अलावा कालसर्प दोष से मुक्ति मिलती है। काले तिल के दाने,नमक व राई से बाधाएं दूर ,पुण्य की प्राप्ति होती हैं। नारियल अर्पण से दृष्टिदोष, शारीरिक और मानसिक समस्याओं का निवारण होता है। होली की भस्म मस्तक पर धारण करने से राहु-केतु की महादशा से मुक्ति, पारिवारिक क्लेश और विवाद का अंत व वास्तुदोष का निवारण होता है। गाय के गोबर की उपलें नकारात्मक शक्तियों, घरेलू परेशानियों को दूर कर वातावरण को शुद्धता प्रदान करती हैं।

अरंड (अंडा) पेड़ की टहनी गाड़ने से समस्त रोगों का अवसान होता है और ये सहज रूप से गांव -शहर में उपलब्ध हो जाती हैं। इसके फल, पत्तियां, टहनियां रोगकारक जीवाणु , कीटाणु से रक्षा करती हैं। दुर्भिक्ष (अकाल), भूखमरी और रूग्णता से मुक्ति दिलाती है।

होली की रात्रि दैवी की जागरण की रात्रि होती है। तभी तो भक्तों और श्रद्धालुओं की मंडलियां भक्ति भाव से गा उठती हैं-अरे!सर ररा सुन ले मोर कबीर..

प्रथम चरण गणपति को मनाव, गणपति को मनाव।....अरे!
हां हां दे दे बुल ऊवा राधे को,
के ब्रज में होली होय।...
फागुन महराज अब के गये कब अइ हव।...

होली,प्रेम के रंगों में सराबोर हो जाने का संदेश देती है। साथ ही अभद्रता का त्याग कर भद्रता को अपनाने का पुरजोर समर्थन करती है। होली ,निष्कलुषित प्रेम का परिचायक है । जो भाईचारे के साथ जीने का आह्वान करती है। अंत में-
आओ खो जाएं हँसी ठिठोली में।